युगपुरुष ब्रह्मलीन महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज के 52वीं एवं राष्ट्रसंत महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज की 7वीं पुण्यतिथि साप्ताहिक पुण्यतिथि समारोह

18 सितम्बर से 24 सितम्बर 2021

श्रीगोरखनाथ मन्दिर में संगोष्ठी

प्रेस विज्ञप्ति

गोरखपुर, 20 सितम्बर। गोरखनाथ मन्दिर में युगपुरुष ब्रह्मलीन महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज की 52वीं पुण्यतिथि एवं ब्रह्मलीन महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज की 7वीं पुण्यतिथि समारोह के अन्तर्गत ‘‘सामाजिक समरसता में सन्तो का योगदान’ संगोष्ठी में मुख्य वक्ता दिगम्बर अखाड़ा, अयोध्या के महन्त सुरेशदास जी महाराज ने कहा कि ‘छुआछूत मिटाओं और देश बचाओ’ का मंत्र फूॅंकना होगा। छुआछूत की भावना और धार्मिक संकीर्णता से हिन्दू समाज कमजोर होता है, राष्ट्र कमजोर होता है। सामाजिक समरसता को व्यवस्था परिवर्तन का हिस्सा बनाना होगा और सामाजिक समरसता अभियान के लिए शिक्षण संस्थाओं को आगे आना होगा। हिन्दू समाज में उँचनीच, छुआछूत, नारी-पुरूष जैसी विषमताओं का कोई स्थान नही है। सनातन हिन्दू धर्म ने कभी भी सामाजिक विषमता को स्थान नही दिया। हमारे यहाॅ वर्ण व्यवस्था थी किन्तु छुआछूत नही था। छुआछूत मध्यकाल के मुस्लिम शासन काल की देन है। मुस्लिम काल में हिन्दू समाज में अनेक विकृतियाॅ उत्पन्न हुई और कालान्तर में वे रूढ़िग्रस्त हो गई। किन्तु अब समय आ गया है कि हमें समतायुक्त, शोषणमुक्त समाज की रचना करना चाहिये। भारत में सामाजिक विषमता की विषबेली विकसित हुई तो भगवान बुद्ध से रमणि महर्षि, स्वामी रामानन्द, नाथ पंथ की पूरी परम्परा, बाबा साहब भीमराव अम्बेडकर और ब्रह्मलीन युगपुरूष महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज तथा ब्रह्मलीन महंत अवेद्यनाथ जी महाराज तक की महात्माओं, संतो की ऐसी परम्परा मिलती है जो सदा इसके खिलाफ संघर्ष करते रहे हंै। भारत मे धर्मगुरुओं की एक श्रेष्ठ परम्परा रही है जो संस्कृति मंे आई विकृति के खिलाफ सदा लड़ते रहे है। छुआछूत के खिलाफ भारत में जारी संघर्ष का नेतृत्व आज भी गोरक्षपीठ कर रहा है। यह हमारे

लिए सौभाग्य की बात है भारत मानवता की भूमि है। भारत देवभूमि है और भारत एक समरस, संवेदनशील और सभी में एक ही परमात्मा का अंश मानने वाले दर्शन की भूमि है। अतः कालान्तर में आयी छुआछूत जैसे विकृति का भारतीय समाज में होना एक अभिशाप है। उन्होंने आगे कहा राष्ट्रीय एकता एवं अखण्डता के लिए सम्पूर्ण हिन्दू समाज को एक करने का योगी आदित्यनाथ जी जो प्रयास कर रहे है, देश का सन्त समाज उनका नेतृत्व स्वीकार करता है। हम सभी हिन्दू समाज की रूढ़िगत व्यवस्थाओं को ध्वस्त कर भारत में एक ही जाति की स्थापना में लगे है, वह हिन्दू जाति होगी। जो सकल जीवात्मा को प्यार करते है वहीं सन्त है। जो सभी जीवों को एक साथ सम्मान दे वहीं सन्त है। जाति-पाॅति से ऊपर उठकर सभी मानव को समानता का भाव दें वही सन्त है। जो विपरीत परिस्थितियों में भी सामाजिक भावना को न छोड़े वहीं सन्त है। सन्तों ने सामाजिक समरसता के लिए न केवल स्वंय आगे आये बल्कि अपने जीवन में समरसता का भाव जगाये रखे तथा औरों को भी समरस होने की प्रेरणा दी। भारत में सामाजिक समरसता यदि कायम है तो इसका सम्पूर्ण श्रेय सन्त समाज को जाता है। गोरक्षपीठ तो अपने सामाजिक समरसता के लिए विश्व पटल पर जाना जाता है। देश की सभी समस्याओं के समाधान का मूल सामाजिक समरसता में निहित है। हम उस आध्यात्मिक संस्कृति के वारिस है जिसने कण-कण में परमात्मा का वास तथा सभी प्राणियों में उसी परमात्मा का अंश माना है। हम समरसता की शिक्षा परिवार से ही सीखते है।

दीनदयाल दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय के राजनीति शास्त्र विभाग के पूर्व अध्यक्ष प्रो गोपाल प्रसाद जी ने कहा कि यह श्रद्धांजलि सभा का आयोजन हमारे लिए बहुत अविस्मरणीय है।इसमें देश के अनेक संतों का समागम होना गोरखपुर के लिए सौभाग्य का विषय है। समाज में विश्व बंधुत्व भाईचारा स्थापित करने और समाज को संगठित करने के लिए मठ मंदिरों के माध्यम से संत ही सबसे आगे आये। इसी क्रम में गोरक्षपीठ ने हमेशा से सामाजिक समस्याओं के लिए खासकर सामाजिक समरसता के लिए विशेष कार्य किया है । पूज्य ब्रह्मलीन महंत अवेद्यनाथ जी महाराज का संपूर्ण जीवन सामाजिक समरसता के लिए रहा है। यदि किसी समाज में संत महात्मा अपना योगदान नहीं देंगे तो समाज का विकास व कल्याण संभव नहीं है।गोरक्षपीठ की संपूर्ण संत परंपरा ही भारतीय संस्कृति तथा सामाजिक समरसता के लिए जानी जाती है। हम बड़े ही सौभाग्यशाली हैं कि हमें

पूज्य दोनों महंत जी महाराज की पुण्यतिथि पर इस प्रकार के विषयों पर व्याख्यान तथा संत जनों का आशीर्वाद मिलता रहता है। पूज्य संत गण ही हमारे समाज को सही मार्गदर्शन करने में सक्षम होते हैं । संत ही ईश्वर का दर्शन कराता है।

उन्होंने आगे कहा कि दुनिया की श्रेष्ठतम हिन्दू संस्कृति, श्रेष्ठतम हिन्दू जीवन पद्धति एवं श्रेष्ठतम् सामाजिक व्यवस्था में जाति के आधार पर ऊँच-नीच की भावना और छुआछूत एक कोढ़ है। धार्मिक संकीर्णता भी हमारे समाज को रूढ़िगत बनाता है। देश के सन्त-महात्मा एवं धर्माचार्य तो स्वतंत्रता के बाद से ही सामाजिक समरसता का अभियान छेड़ दिया। ब्रह्मलीन महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज एवं ब्रह्मलीन महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज ने तो इस विषय पर व्यापक जनजागरण का अभियान चलाया। उन्होनें कहा कि हम 'वसुधैव कुटुम्बकम्' के वाहक है। हिन्दू संस्कृति तो कण-कण में भगवान का दर्शन कराती है। जहाॅ अद्वैत वेदान्त का दर्शन गूॅजा, उस संस्कृति में छुआछूत एवं धार्मिक संकीर्णता जैसी अमानवीय रूढ़िगत व्यवस्था की स्वीकृति कैसे की जा सकती है। हिन्दू समाज में छुआछूत, उॅच-नीच, अमीर-गरीब, नारी-पुरूष जैसे किसी भी विषमता को कोई स्थान नही है और न ही ये शास्त्र सम्मत है। हिन्दू समाज अपनी संस्कृति के शाश्वत पक्षों को पहचाने, संस्कृति को स्वीकारे और सामाजिक विकृति की त्याग करें। भारत माता का हर वह पुत्र जो भारतीय परम्परा का वाहक है वह एक समान है, एक जैसा है, न कोई ऊॅचा है न कोई नीचा है।

जगतगुरु रामानुजाचार्य स्वामी वासुदेवाचार्य जी महाराज ने कहा कि समाज मनुष्य के समुदाय को और समज पशुओं के समुदाय को कहते हैं। यदि हमारे पास समझ का अभाव होगा तो हम समाज से समज की श्रेणी में आ जाते हैं हमें अपनी पूरी समझदारी के साथ समाज को एक रस बनाने का प्रयास करना चाहिए। यह हमारे सामाजिक होने का परम कर्तव्य है।हमें सिर्फ रोटी और बेटी के लिए समाज का ध्यान नहीं होना चाहिए अपित प्रत्येक वर्ग के लिए सोचना चाहिए । हमारी संस्कृति में सामाजिक समरसता का उदाहरण वेदव्यास का जन्म है जो अठारह पुराणों ,उप पुराणों, महाभारत आदि के रचयिता बने । हमारी समाज में ऐसी व्यवस्था लाने की आवश्यकता है जिससे समाज के निम्न वर्गों के व्यक्ति में हीन भावना न रहे। संत कबीरदास और संत रविदास जैसे महापुरुष दलित वर्ग में हुए

किंतु समाज के सभी वर्ग के लिए पूज्य हुए ,यही सामाजिक समरसता है।हमारा संत समाज, सनातन परंपरा में आने वाले प्रत्येक व्यक्ति को सम्मान दिलाने के लिए कार्य किया है। इसी क्रम में युगपुरुष महंत दिग्विजयनाथ जी व राष्ट्रसंत महंत अवेद्यनाथ जी ने अपने कार्यों में छोटे से छोटे वर्ग के व्यक्ति को अग्रिम भूमिका में रखा। समाज का प्रत्येक व्यक्ति समान हो और सभी मिलजुल कर रहे ,आपस में प्रेमभाव हो यही सामाजिक समरसता है । जाति या वर्ण का निर्धारण कर्म से होता है नकि जन्म से।जिस प्रकार हर तरह के कर्मों की आवश्यकता समाज में रहने वालों की होती है उसी तरह हर प्रकार के कर्म करने वालों की भी आवश्यकता सबको होती है। इसलिए हमारे संतो ने समय-समय पर सामाजिक समरसता का संदेश दिया ।

कटक उड़िसा से पधारे महन्त शिवनाथ जी महाराज ने कहा कि राष्ट्रीय एकता-अखंडता और आधुनिक भारत के निर्माण हेतु आवश्यक है समरस अथवा छुआछूत विहीन समाज की रचना। गुरु गोरक्षनाथ ने छुआछूत के खिलाफ हजारो वर्ष पहले सामाजिक क्रान्ति का उद्घोष किया था। आज भी गोरक्षपीठ सामाजिक क्रान्ति की उस परम्परा को आगे बढ़ाने में लगी हुई है। भेदभाव और छुआछूत भारत की संस्कृति नहीं विकृति है। उन्होंने आगे कहा कि हर देश का एक राष्ट्रीय समाज होता है। भारत का राष्ट्रीय समाज हिन्दू समाज है। राष्ट्रीय समाज जब कमजोर होता है तो राष्ट्र कमजोर होता है। राष्ट्र समाज का जब पतन होता है तो राष्ट्र का पतन होता है। भारत की गुलामी और पतन के लिए वाहय एवं विदेशी ताकते जितनी जिम्मेवार है है उससे कम जिम्मेवार हिन्दू समाज की रूढ़िगत व्यवस्था नही है। 'मुझे मत छूओ' अर्थात् छुआछूत की भावना से भारत का राष्ट्रीय समाज कमजोर हुआ। हमारे धर्माचार्यो ने सामाजिक समरसता के निरन्तर प्रयास किये है। गुरू गोरखनाथ, शंकराचार्य, रामानन्दाचार्य से लेकर ब्रह्मलीन महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज और गोरक्षपीठ के ब्रह्मलीन महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज के नेतृत्व में धर्माचार्यो ने हिन्दू समाज की इस सामाजिक कोढ़ के खिलाफ अनवरत शंखनाद फूॅंका है। हिन्दू समाज राष्ट्रीय एकता और अखण्डता की रक्षा हेतु एक होकर अपने समाज की रूढ़ियों के खिलाफ खड़ा हो।

बड़ौदा गुजरात से पधारे महन्त गंगादास जी महाराज ने कहा कि सामाजिक समरसता में ही हमारी संस्कृति का प्राण बसता है। सामाजिक समरसता के बगैर

भारतीय संस्कृति अधूरी एवं मृत प्रायः है। वनवासियों, गृहवासियों से हमें सामाजिक समरसता का मंत्र सीखना होगा, वनवासियों, गिरिवासियों में आज भारत की सांस्कृतिक परम्परा जीवित है और वहाॅ समाज का हर व्यक्ति एक दूसरे का पूरक है। उन्होंने आगे कहा कि दैनन्दिनि जीवन में जो समाज गो-ग्रास निकालता हो, पक्षियों का दाना खिलाता हो, चीटियों का आटा खिलाता हो वह समाज अपनो को ही अछुत कैसे मान सकता है। ऐसे में महापुरूषों की यह वाणी हमारे लिए वरैण्य है कि यदि छुँआछूत यदि पाप नही है तो दुनिया में कुछ भी पाप नही।

अध्यक्षता कर रहे महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद् के अध्यक्ष पूर्व कुलपति प्रो0 यू0पी0सिंह ने कहा कि हिन्दू समाज को अपने व्यवहार से यह सिद्ध करना होगा कि हम दुनिया के श्रेष्ठतम समाज की पुनसर््थापना में सक्षम है। दुनियां में भौतिकता और आतंक से कराह रही 'मानवता' भारत की ओर अपेक्षा भरी नजरों से देख रही है। सत्य सनातन हिन्दू संस्कृति के शाश्वत मूल्यों की पुनर्प्रतिष्ठा से ही मानवता की रक्षा सम्भव है। अतः हिन्दू समाज अपने समाज की विकृतियों को दूर करें और राजनीतिक षड्यंत्रों को समझें। हिन्दू समाज को यदि जीवित रहना है तो छुआछूत को समाप्त करना ही होगा। गोरक्षपीठ के ब्रह्मलीन पीठाधीश्वर महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज एवं महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज जीवनभर सामाजिक समरसता की पुर्नप्रतिष्ठा हेतु जूझते रहे। महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज तो अष्ठभुजी दुर्गा के आठों हाथों के हिन्दु समाज के चारों वर्णों का सयुक्त हाथ मानते थे।

समारोह का शुभारम्भ दोनों ब्रह्मलीन महाराज जी को पुष्पांजलि, डाॅ0 रंगनाथ त्रिपाठी द्वारा वैदिक मंगलाचरण एवं सुजल तिवारी तथा गौरव तिवारी द्वारा गोरक्षाष्टक पाठ के साथ हुआ। संचालन माधवेन्द्र राज ने किया। इस अवसर पर योगी कमलनाथ जी महाराज, महन्त मिथलेशनाथ जी महाराज, राममिलनदास जी महाराज मंच पर उपस्थित रहें।